धर्म हिंसा नहीं सिखाता...

- राजयोगी ब्र.कु.सूर्य,माउण्ट आबू

एक ओर धरती के चेतन सितारों (मनुष्यों) की शान्ति की पुकार और दूसरी ओर वसुधा के वक्षस्थल पर बढ़ती हुई हिंसा की अग्नि! कैसी विडम्बना है कि मानव की मानवता को लोप कर ही दिया, अब वह सम्पूर्ण मानव जाति के संहार के लिए तैयार है। मानव जाति को नष्ट करने की होड़ में वह अन्धा हो चुका है। ऐसे अन्धकार-पूर्ण विकराल काल में सच्चा धर्म ही मानव की रक्षा कर सकता है। तो आओ हम धर्म के सत्य स्वरूप पर दृष्टि डालें।

क्या है धर्म?

''धर्म जीवन की उन श्रेष्ठ धारणाओं का नाम है जिन पर मनुष्य-जीवन सुख-शान्ति पूर्वक प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके''। जैसे बौद्ध धर्म का मूल है 'दया'। भारत में किसी ने 'अहिंसा' को परम-धर्म कहा तो किसी ने त्याग, तपस्या, व मानव-सेवा को धर्म का अभिन्न अंग बताया। परन्तु धर्म की सम्पूर्ण व्याख्या, धर्म के रक्षक परमपिता परमात्मा स्वयं ही करते हैं। यहाँ हम उन्हीं के ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर व्याख्या करेंगे।

धर्म का इंग्लिश शब्द है - 'RELIGION'। इस religion शब्द के आठ अक्षरों में धर्म की व्यख्या अन्तर्निहित है। यहां R=Reverse (पवित्र) E=Ecstasy (आनन्द), L=Love (प्रेम), I=Introspection (अन्तदर्शन), G=God (भगवान), I=Impartial (निष्पक्षता), O=Oneness (एकता), N=Non-voilence (अहिंसा)

अर्थात् धर्म की व्यख्या इस प्रकार की जा सकती है कि जब मनुष्य अन्तदर्शन करके अर्थात् स्वयं को आत्मा जानकर, परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ता है, तब उसके जीवन में पवित्रता, प्रेम, अहिंसा, एकता का भाव, आनन्द व निष्पक्षता का भाव आता है और तब ही उसको सम्पूर्ण शान्ति का अनुभव होगा।

धर्म दो प्रकार के हैं - एक है देह के धर्म, जो सभी के अलग अलग हैं, जैसे हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई आदि। और दूसरा है - आत्मा का धर्म अर्थात् स्व का धर्म और वह है 'शान्ति', जो कि सभी का एक ही है। देह के सभी धर्मों का भी अन्तिम ध्येय, मनुष्य को आत्मिक स्वधर्म में स्थित करना ही है।

शान्ति सिखाता है धर्म

मनुष्य को धर्म की आवश्यकता कब पड़ी? विचारक समझ सकते हैं कि जब किन्हीं कारणों से मनुष्य का मन अशान्त हुआ होगा, तब ही उसने शान्ति के लिए धर्म की रचना की होगी। इसलिए हर धर्म स्थापक ने मनुष्य जीवन में शान्ति लाने के लिए विभिन्न सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। अत: हर धर्म का मूल शान्ति है, न कि हिंसा।

धर्म के नाम पर कलंक है हिंसा

यदि कोई धर्मावलम्बी शान्ति के लिए हिंसा का सहारा लेते हैं या धर्म की रक्षा के लिए 'हिंसा' को ढ़ाल बनाते हैं तो स्पष्ट है कि उन्होंने धर्म के मर्म को नहीं समझा। धर्म एक अति पवित्र दिशा है और हिंसा अमानवियता। हिंसा व धर्म साथ साथ नहीं हो सकते। जो धर्म से हिंसा को जोड़ते हैं, उनका धर्म अधिक स्थाई नहीं हो सकता। धर्म में हिंसा का प्रवेश, धर्म के विनाश का बिगुल है। अत: धर्म का नारा लगाने वालों को अन्तर्मुखी होकर चिन्तन करना चाहिए कि क्या उनका हिंसा का पथ धर्मानुकूल है या धर्म के नाम पर कलंक है? जो कि मनुष्य को धर्म से विमुख करता है और नास्तिकता को बढ़ावा देता है।

धर्म के नाम पर बलिदान

लोग धर्म के नाम पर बलिदान करते आए हैं, परन्तु धर्म स्वयं भी बलिदान होता आया है। इसी ''धर्म के नाम पर बलिदान'' के नारे से आज भी लोग धर्म के नाम पर हिंसा को बढ़ावा देते हैं। परन्तु अब समय की पुकार है कि हे धर्म-प्रेमियों धर्म की रक्षा के लिए इस क्रोध व अहंकार का बलिदान करो। यदि तुम्हारे अन्दर ही अग्नि जलती रहेगी तो तुम दूसरों की अग्नि कैसे बुझाओगे। अर्थात् तुम शान्ति का साम्राज्य कैसे लाओगे। इसलिए पवित्र धर्म अपनी रक्षा के लिए तुम्हारे मनोविकारों की बलि चाहता है। तब ही धर्म की वेदी पावन होगी, धर्म का उत्थान होगा और मानव व मानवता की रक्षा होगी। इसलिए यदि सचमुच तुम्हें धर्म से प्रेम है तो तुम ये बलिदान करो। देह के बलिदान का महत्व अब नहीं रहा, अब तो इस देह-अभिमान का बलिदान दो, तब तुम्हारा पवित्र धर्म विश्व की रक्षा करेगा।

एकता व प्रेम सिखाता है धर्म

धर्म मनुष्य को अन्तर्दर्शन कराता है अर्थात मनुष्य को आत्मा का ज्ञान कराकर, उसका नाता परमात्मा से जोड़ता है। अत: एक धर्मावलम्बी यह समझता है कि परमात्मा सभी मनुष्यात्माओं का परमपिता है। उस नाते हम सभी आत्मायें एक विश्व परिवार के सदस्य हैं। इस कारण उसके मन में एक पारिवारिक अनुभूति व पवित्र स्नेह रहता है। धर्म केवल यही ही नहीं सिखाता कि हम रोज़ सवेरे उठकर, ऊँची आवाज़ में प्रभु के गीत गायें और दिनभर मनुष्यों पर बन्दूक चलायें। यह सत्य ही है कि भगवान से प्यार करने वाला मनुष्य, भगवान की रचना से अवश्य ही प्यार करेगा। उसकी रचना से प्यार न करना स्वार्थी ईश्वरीय प्यार का प्रतीक है।

परन्तु कितना आश्चर्य है कि एक ओर इसाई धर्म का मूल उपदेश 'प्रेम' है। ईसा मसीह ने मानव को सत्य-प्रेम का पाठ पढ़ाया था, परन्तु आज उसकी सन्तान मानव जाति को पृथ्वी से पूर्णतया नष्ट करने पर उतारू हैं। काश! इन्हें ईसा की आवाज़ फिर से सुनाई दे जाए और ये प्रेम का पथ अपना लें।

धर्म अहिंसा सिखाता है

यद्यपि ''अहिंसा परमोधर्म'' का नारा अति पुराना है, तो भी इतिहास में धर्म के नाम पर ही बड़े बड़े ताण्डव नृत्य हुए। हिंसा भी दो प्रकार की है - एक काम विकार की हिंसा, जो वास्तव में आत्मा की हिंसा है क्योंकि काम भोग आत्मा की शक्ति को नष्ट कर डालता है। दूसरी हिंसा है - क्रोध की, जिसके वश मनुष्य जीवप्राणियों पर प्रहार करता है। हिंसा पहले मन में ही उत्पन्न होती है अत: आवश्यकता है, मनुष्य के मन को शान्त करने की। और वह होगी, काम व क्रोध की अग्नि को बुझाने से। क्योंकि धर्म मनुष्य को प्रेम व पवित्रता सिखाता है, अत: इससे हिंसा की अग्नि शान्त हो जाती है। सच्चे धर्मावलम्बी के मन में काम व क्रोध की अग्नि नहीं उभरती, उनका मन शान्ति की गहन अनुभूतियों में खोया रहता है। ●

कोटा जंक्शन-राज.। ए.डी.आर.एम. मनोज कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रीति।

लखनऊ-उ.प्र.। राज्यपाल राम नाइक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राधा।

लुधियाना-पंजाब। डिप्युटी चीफ मिनिस्टर सुखबीर सिंह बादल को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरस। साथ हैं ब्र.कु. सुषमा तथा अन्य।

बुटवल-नेपाल। ब्रह्मनिष्ठ संत शिरोमणि स्वामी श्री लोकानन्द गुरु जी महाराज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. कमला।

गाज़ीपुर-उ.प्र.। रेल राज्यमंत्री तथा संचार मंत्री मनोज सिन्हा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निर्मला।

करहल-उ.प्र.। टी. प्रभाकरण,वाइस चांसलर,मेडिकल यूनिवर्सिटी,सैफयी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. निधि।

फतेहपुर-उ.प्र.। जिलाधिकारी वेदपति मिश्रा को रक्षासूत्र बांधने के बाद ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. स्वाति।